CHILDREN'S JAIN MAGAZINE
(English,Gujarati & Hindi)
EVERY FORTNIGHT
25TH NOVEMBER 2015

LOOK n LEARN

Rs. 5.00/-

Year - 9, Vol: 6, Issue: 08, Date: 25.11.2015
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

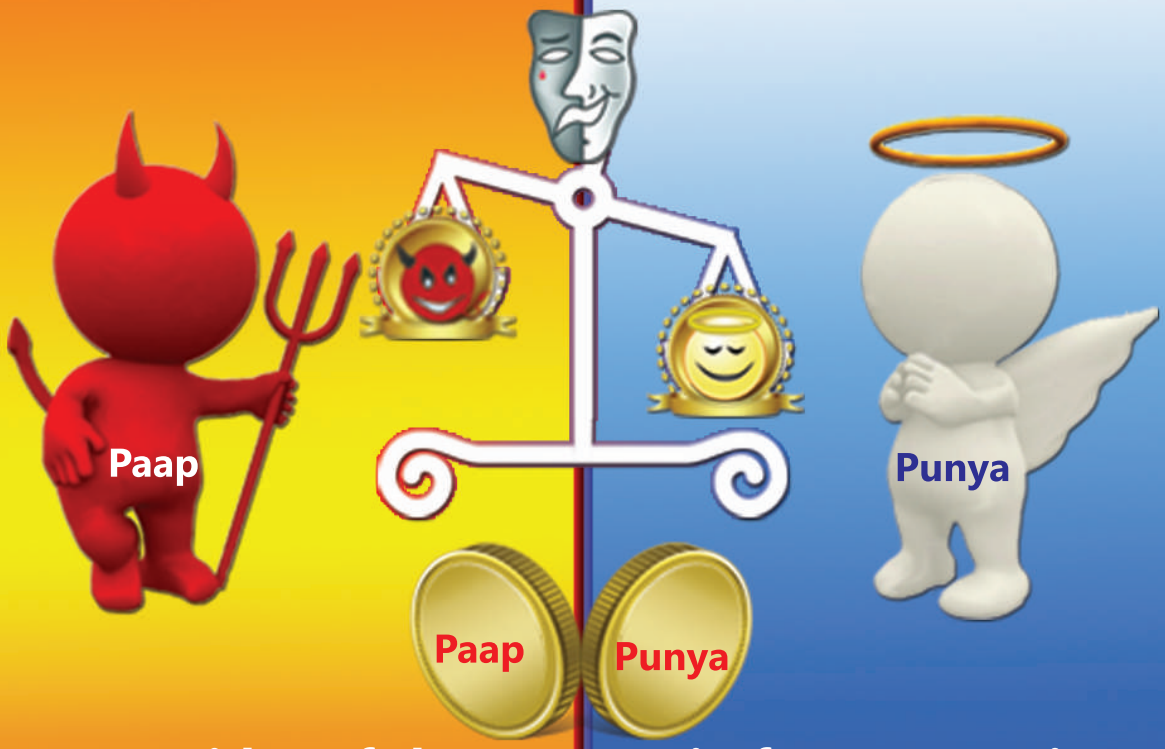

are two sides of the same coin for a Sansari Jeev

पुण्य और पाप यह संसारी जीव के सिक्के के दो पहलु हैं। जीव का आरंभ और अंत उदय बिना नहीं होता। जीव के इस उदय को पुण्य और पाप कहते हैं। पुण्य और पाप के बिना जीवन शक्य ही नहीं है।

"परमात्मा" कहते है कि पूरे दिन में एलर्ट रहकर पुण्य करते रहना चाहिए क्योंकि संसारी जीवों का ज्यादातर समय पाप की प्रवृत्ति में ही बीतता हैं।

तो पुण्य कीसे कहते हैं? "जो आत्मा को पवित्र करें, जिसकी प्रकृति शुभ हो, जो आत्मा को सुख और अनुकुलता दे, जो आत्मा को पवित्र बनाने में सहायक रुप हो उसी को पुण्य कहते हैं।"

"सुख के उदय को पुण्य कहते हैं। पुण्य धर्म में सहायक होता है।"

Punya and Paap are two sides of the same coin for a Sansari jeev. The rise and fall of any individual jeev is because of his deeds. When one performs good deeds, he destroys his bad Karmas & gains good Karmas which is called 'Punya'.

Whenever one does something wrong, its karma is called "Paap". Parmatma says, "We should always be alert and do as much 'Punya' as possible because when we are in sansar we tend to usually do activities which give rise to Paap".

Transcripted by Alpa Momaya (LNL Parent, Masjid Bunder)

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription:
10 Years Rs. 500
Lifetime Rs. 1000

How do we bind Punya?

पुण्य कैसे बांधते है ?

किसी दुसरे जीव को शाता देकर, परोपकार, दया, सत्य, शील, क्षमा, तप नियम, व्रत-पच्चक्खाण, विनय इत्यादी करनेसे माता-पिता, गुरु की विनय पूर्वक सेवा करने से हम पुण्य बांधते है।

पुण्य के फल स्वरुप हमे अच्छे संजोग प्राप्त होते है जिसमें धर्म की आराधना होती है। धर्म करने से मोक्ष प्राप्त होता है। पुण्य ही धर्म नही है, परंतु पुण्य धर्म की अनुकुलता है।

Helping others who are in pain, always supporting truth, practicing forgiveness, practicing self-discipline, practicing penance, respecting our elders, parents, teachers and even those who are junior to us, etc. helps in binding 'Punya'.

Punya helps to create positive situations which in turn helps one to follow DHARMA. Following Dharma leads to SALVATION. "Punya is not dharma, it is the means which helps us to follow Dharma".

- Nysa Doshi

पूण्य के उदय से, हमें १० बोल का अनुभव होता है, जो बहुत ही शुभ होते हैं...

1. मनुष्य भव मिलता है
2. आर्य क्षेत्र मिलता है
3. उत्तम कुल मिलता है
4. लंबी आयु होती है
5. पाँच इंद्रिया परिपूर्ण मिलती है
6. शरीर निरोगी होता है
7. साधु-संत का जोग मिलता है
8. जिनवाणी सूनने मिलती है
9. जिनवाणी पर श्रद्धा होती है
10. दिक्षा लेने का पुरुषार्थ होता है

- Mehta Parivar

Anna Punya

To give food to the hungry

आहार ईच्छुक प्राणीयों को भोजन के पदार्थ देना ही अन्न पुण्य हैं। चौवियार हाऊस चलाना, दानशाला चलाना, हर रोज अपनी शक्ति के अनुसार प्राणीयों को अन्नदान देना जैसे की कुत्तें को बिस्कीट, गाय को रोटी, पक्षियों को चना या जुवार आदि देना, गरीबों को खाना खिलाना। यह सब करने से अन्न पुण्य का बंध होता हैं।

नयसार

जयन्ती नामकी नगरी थी। उस गांव के मुखिया नयसार थे। एक बार राजमहेल बनाने के लिए बहुत अच्छी लकड़ीयों की जरुरत थी। इसलिए राजाने यह काम नयसार को सोंपा। नयसार कुछ लोगो को लेकर अच्छी लकडीया लेने जंगल में जाते है। दोपहर का समय था, नयसार का एक नियम था कि वह हमेशा भोजन कीसी को व्होराने के बाद ही स्वयं खाना खाते थे। नयसार खड़े होके दूर दूर तक देखते है कि कोई अतिथि आए तो सत्कार करुं, उतने में कोई आता हुआ दिखाई देता है। नयसार तुरंत ही उस दिशा में जाते है। दो जैन साधु नयसार को देखकर उसकी तरफ आते है। नयसार बहोत भाव से दो हाथ जोड़कर प्रणाम करते है और सन्मान से दोनो साधुओ को वृक्ष की छाँव में लेकर आते है और वहाँ आराम करने को कहते है। थोडी देर के बाद वह कहते है, ''महाराज यह शुद्ध भोजन तैयार है, मटके में ठंडी छाछ है, आप यह भोजन ग्रहण करके मुझ पर उपकार करीए।'' नयसार की नम्रता और विनयभाव देखकर मुनिराज शुद्ध भोजन लेते है। नयसार का यह नियम उन्हें समकित की प्राप्ति कराता है और वही हमारे भावी के तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी बनते है।

Paan Punya

To give water to the thirsty

तपस्वीयों को पानी पीलाना, पूज्य संतो को ऊबला हुआ पानी वहोराना, कोई भी व्यक्ति को पीने का पानी देना। आम लोगों के लिए पानी की परब बांधना, या पीने की कोई भी चीज जैसे की छाछ या नींबू पानी बाँटना। घर में अपने से बड़ों को या बिमार लोगों को पानी देना।

इस प्रकार का दान करने से पाण पुण्य का लाभ मिलता है।

भगवान नेमीनाथ

भगवान नेमीनाथ उनके पूर्व भवमें एक नगर के राजा थे। उनका नाम शंखराज था। वे बहोत नम्र, विवेकी और धर्मीष्ठ थे।

एक वक्त शेषकाल में मुनि पानी की तलाश मे शंखराज के महल पहूँचे। उस वक्त शंखराज के पास अंगूर का पानी था।

शंखराज ने अंगूर का पानी बहुत भाव से मुनिओं को वहोराया और तीर्थंकर नाम कर्म का बंध किया।

वही आगे जाकर अपने २२ वे तीर्थंकर नेमीनाथ भगवान बने।

Layan Punya

Offering a place of stay

जगा का दान देने से जो जीव पुण्य बांधे उसे लयन पुण्य कहते हैं। पूज्य संत को अपने खाली मकान में रहने देना, अपना मकान धर्म कार्य के लिये उपयोग करना, आयंबिल भवन के लिये, जैनशाला के लिये, अस्पताल या स्कूल के लिए, ऐसे अन्य और कार्य के लिए अपनी जगह देने से, या कोई भी धार्मिक स्थान या आश्रम बन रहा हो वहाँ दान देने से लयन पुण्य का बंध होता है।

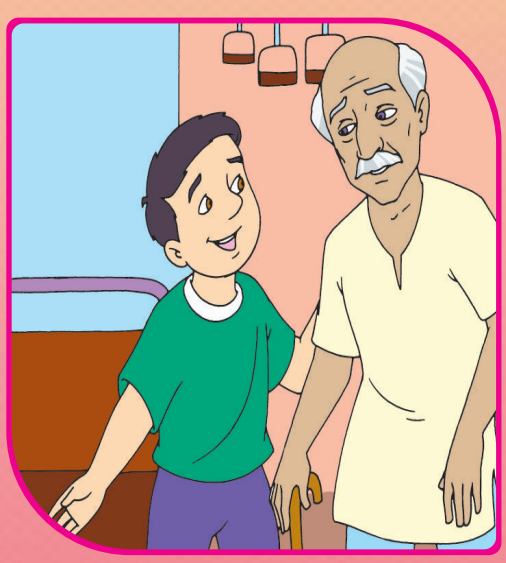

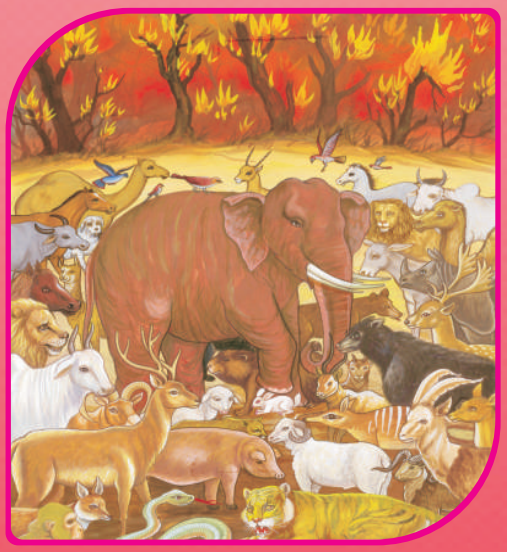

मेघकुमार

मेघकुमार पिछले जन्ममें हाथी के रुप में थे, तब पुरा जंगल आग की लपेट में आ गया था। सारे पशु अपनी जान बचाने एक वाडे में जरा सी जगह मिली तो, वहाँ इकट्ठा हो गए। हाथी के पैरों में खुजली हुई और उसने अपना पैर उठाया। तभी एक खरगोश वहाँ आके बैठ गया। हाथी पैर नीचे रखने गया तो महसूस हुआ की कोई नीचे है। देखा तो एक खरगोश अपनी जान बचाने आया था। हाथी ने सोचा की, "अगर पैर नीचे रखुंगा तो खरगोश मर जाएगा, तो पैर उपर उठा कर ही रखता हुँ" और उसी परिस्थितिमें ८ दिन तक था। फिर जब आग शांत हुई तब हाथी ने पैर निचे रखा तो उसे असहनीय पीडा होने लगी और उसी पीडा मे वह मर गया। उसे लयन पुण्य की प्राप्ति हूई और वह राजगृहि नगरी में श्रेणिक राजा के पुत्र मेघकुमार बने।

Shayan Punya

Giving someone a place to sleep

शैया का दान देने से जो पुण्य बंध होता है उसे शयन पुण्य कहते है। बडी उमर के या बीमार व्यक्ति जो नीचे ना सो सक्ते हो उन्हे बिस्तर पर सोने देना और खुद निचे सो जाना, पैरों की जिसे तकलीफ हो उसे बिस्तर पे सोने देने से शयन पुण्य का बंध होता है। धार्मिक जगहों पर संतो को बैठने के लिए पाठ देना, किसी को सोने के लिए बिस्तर और बिछोना देने से शयन पुण्य का लाभ होता है।

जयंती श्राविका

शतानिक नाम के एक राजा थे। उनकी बहन थी जिनका नाम जयंती था, जो श्राविका थी, उन्होंने १२ व्रत धारण किए थे। महिने में पाँच तिथी पर वनस्पति का त्याग, हमेंशा के लिये कंदमूल का त्याग, देवसीय और रायसीय प्रतिक्रमण करनेवाली, ऐसी चुस्त श्राविका थी। एक समय की बात है, महावीर उनके शिष्यों के साथ चलते चलते वहाँ आये थे। जयंती ने प्रभु महावीर और उनके शिष्यों को बहुत ही भावपूर्वक शैया का दान कीया और पुण्य का बंध कीया।

Vastra Punya

To provide clothes to others

वस्त्र का दान देने से जो पुण्य का बंध होता है उसे वस्त्र दान कहते हैं। साधु-साध्वीजी को चोलपट्टा-पछेडी या किसी साधर्मिक को वस्त्र देने से वस्त्र दान का पुण्य बंध होता हैं। गरीब या जरुरतमंद को वस्त्र देना, अस्पताल में नव जन्म शीशुओं को बिछौना देना।

इस प्रकार के दान से वस्त्र पुण्य का बंध होता है।

वर्धमान शेठ और जीवानंद वैद्य

श्री ऋषभदेव भगवान ९वे भव में जीवानंद नाम के वैद्य थे। जीवानंद वैद्य आर्युवेद में निपूण थे। एक मुनिराज कुष्ट रोग से पिडित थे उनके शरीर में कीडे पड गए थे। जिवानंद, मुनिराज की चिकित्सा करने तैयार हुए, लेकिन उपचार में काम लगे वैसे गोशीर्ष चंदन और रत्न कंबल उनके पास नही थे। वे कंबल वर्धमान शेठ के पास थे, जीवानंद लाख सोनामहोर खर्च कर के भी वे कंबल मुनिराज के इलाज के लिए खरीदने को तैयार थे। वर्धमान शेठने मुनि की सेवा हेतु दोनो वस्तु कुमार को विनामुल्ये दे दी और वस्त्र पुण्य का बंध किया, वही भव में मोक्ष में गए। जीवानंद वैद्यने भी निःस्वार्थ भाव से मुनि की सेवा की और मुनि की काया निरोगी हो गई।

Manah Punya

To think good of all

अच्छा मन रखने से जीव पुण्य बांधता है जिसे मन पुण्य कहते हैं। पूज्य संतो को पधारते देख, मन में अहोभाव जागना, दीक्षार्थी को देखकर याद करना कि मुझे भी दीक्षा लेनी है, तपस्वी को देखकर तप करने का भाव होना, किसी गरीब या रोगी व्यक्ति को देखकर उनके प्रति करुणा भाव जागृत होना, इस प्रकार मन को शुभ भावों में उपयोग करने से जीव जिस पुण्य प्रकृति को बांधता है, उसे मन पुण्य कहते हैं।

प्रसन्नचंद्र मुनी

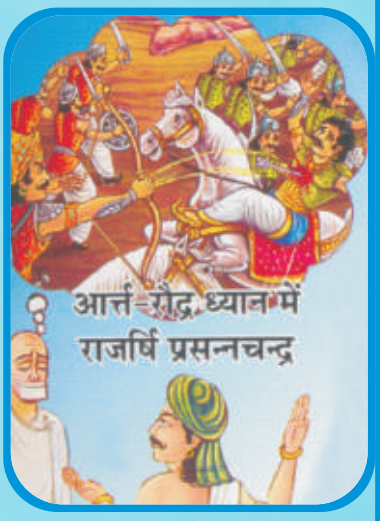

प्रसन्नचंद्र राजर्षि एक राजा थे। उन्होंने अपना राजपाट अपने छोटे कुंवर को सौप दीया और स्वयं संयम ले लिया। दीक्षा लेकर वह ध्यानस्थ दशा में खडे थे। राह में दो मुसाफिर जा रहे थे। उन्होंने प्रसन्नचंद्र राजा को पहचान लिया। पहले ने कहा, "यह संत तो कितने बडे त्यागी हैं"। दुसरे व्यक्ति ने कहा, " इन्हों ने तो दीक्षा ले ली, परंतु छोटे कुंवर के बारे में नही सोचा। एक दुश्मन राजा ने उनके राज्य पर हमला किया। बिचारे छोटे कुंवर कैसे सामना कर पाएंगे" यह बातें सुनकर ध्यानस्थ मुनि सोचने लगे कि, "अरे! यह बात है।" मुनिराज मन ही मन दुश्मन राजा के साथ लड़ाई करने लगे, और इस मानसिक युद्ध में मुनिराज ने ७ वें नरक में जाने जितने कर्म बांध लिए। युद्ध करते-करते सारे शस्त्र समाप्त हो गए तब मुनि ने सोचा कि शस्त्र समाप्त हुए तो क्या हुआ, सर पर मुकुट तो है। ऐसा सोचने पर जब मुनिराज ने अपने सर के मुकुट की तरफ हाथ उठाया तब उन्हे याद आया कि, "अरे! मैं तो साधु हुँ, मुझे यह शोभा नही देता। मैंने घोर पाप कीया हैं।" इस पाप का पश्चाताप करते करते, मन से अच्छी भावना करने से उनके सारे पाप धुल गए और उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

Vachan Punya

To speak kindly and truthfully

अच्छे वचन बोलने से जीव पुण्य बांध सकता है। इस पुण्य प्रकृति को वचन पुण्य कहते हैं। अरिहंत, सिद्ध, गुरु भगवंत के गुणगान करना, किसी दुसरे को सत्य समझाना, दु:खी जीव को आश्वासन देना, साधु-संत जब गोचरी के लिए आए तब विनय पूर्वक और मधुर स्वर में उनका सम्मान करना, महेमानों को आदर देना, शुभ वचनों से जो पुण्य मिलता है, उसे वचन पुण्य कहते है। जैसे बुरा बोलने से, पाप का बंध होता है, उसी तरह अच्छा बोलने से पुण्य का बंध होता है।

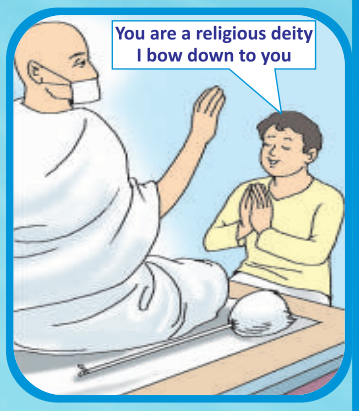

कृष्ण वासुदेव

द्वारका नगरी के राजा श्री कृष्ण वासुदेव थे। एक नियम के अनुसार वासुदेव कभी भी दीक्षा नहीं ले सकते और मृत्यु के बाद वासुदेव नरक में ही जाते है। एक बार, द्वारका नगरी में भगवान श्री नेमिनाथ पधारे। कृष्ण महाराज बहुत खुश हुए और श्री नेमिनाथ भगवान के दर्शन के लिए गए। स्वयं संयम नहीं ले सकते इस बात का कृष्ण महाराज को बहुत दु:ख था, परंतु फिर उन्होंने एक बात सोची, और सारे नगर में यह एलान करवाया कि, "यदि किसी व्यक्ति को दीक्षा लेनी हो और घर-संसार, माता-पिता, बच्चों कि जिम्मेदारी हो तो उन सभी के माता-पिता, बच्चों कि देखभाल स्वंय कृष्ण महाराजा करेंगे। यदी किसी का कर्जा हो, तो उस कर्जे को कृष्ण महाराजा पुरा लौटा देंगे।"

यह एलान सुनकर बहुत लोगो ने दीक्षा ली और कृष्ण महाराजा इस पुण्य में अपने वचनों और आश्वासन से सहभागी बने।

Kāyā Punyā

To do good deeds

काया या शरीर द्वारा जो पुण्य का बंध होता है उसे काया पुण्य कहते है। टी.वी. देखने से कान, आँखों जैसी इंद्रियों का दुरुप्योग होता है। इसके बदले साधु-संतों के दर्शन, उनकी सेवा, बड़ों की सेवा, जिनशासन की प्रभावना या प्रचार करना, काया का शुभ कार्यों में सद्उपयोग करने से काय-पुण्य का बंध होता है। वडीलों की सेवा, साधु-संतों की वैयावच्च, बिमार दर्दीयों की सेवा वगेरे भी काय पुण्य हैं।

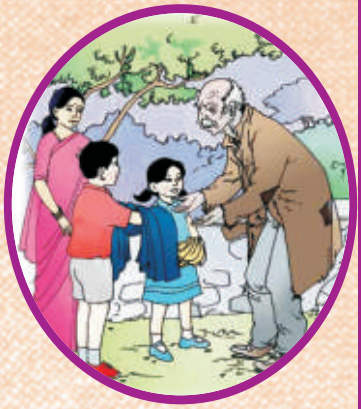

अर्जुनमाली

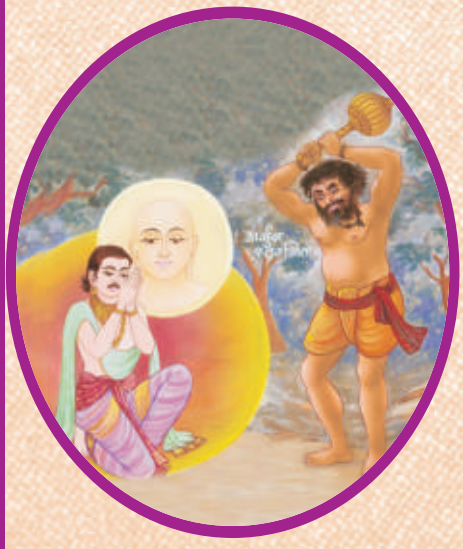

इस बात को एक कहानी द्वारा समझाया गया है। अर्जुनमाली के शरीर में एक यक्ष ने प्रवेश किया। इससे अर्जुनमाली हररोज ६ पुरुष और १ स्त्री ऐसे ७ जीवों की हिंसा करता था। एक बार अर्जुनमाली की भेंट सुदर्शन श्रावक से हुई। भगवान महावीर के दर्शन को जाने वाले सुदर्शन श्रावक को अर्जुनमाली मद्गर ले के मारने जाता है... तभी सुदर्शन श्रावक नमोत्थुणं की मुद्रा में बैठकर दोनों आँखे बंद कर के भाव से स्तुति करने लगते है। जैसे जैसे अर्जुनमाली सुदर्शन श्रावक के पास आने जाता है... वैसे वैसे उसका गुस्सा, शांत होता जाता है। यह है परमात्मा की स्तुति, भक्ति करने से आसपास में positive vibrations उत्पन्न होने का असर... अर्जुनमाली सुदर्शन श्रावक के साथ भगवान महावीर स्वामी के दर्शन को जाता है, संयम अंगीकार करता है और शांत भाव से, समभाव से पापों का प्रायश्चित करके अपनी काया का सदुपयोग करके काया पुण्य का बंध करके, मनुष्य भव सार्थक करता है।

Namaskar Punya

Being respectful towards the great souls

सच्चे हृदय और सच्चे भाव से समकित देव, गुरु और धर्म को नमन करने से नमन पुण्य का बंध होता है। वडील, उपकारी माता-पिता, परम पूज्य गुरुदेव, पूज्यपात साधु-संतो को, परम उपकारी जिनेश्वर भगवंतो को यथा योग्य वंदन करने से नमस्कार पुण्य का बंध होता है। North-East direction में बिराजमान श्री सिमंधर स्वामी भगवान को वंदन, परम पूज्य साधु-संतो को वंदन करना, माता-पिता, गुरुजनो के चरण स्पर्श करना।

बाहुबली

ऋषभदेव भगवानने अपने १०० पूत्रो को राज्य सौंपकर दीक्षा अंगिकार की। इन में से भरत शक्तिशाली थे, वे चक्रवर्ति बनना चाहते थे। इसलिए उन्होंने ९८ भाइयो के साथ युद्ध कीया और उनका राज्य छीन लिया। उन ९८ भाइयो ने दीक्षा अंगिकार की। अब भरत और बाहुबली के बीच युद्ध चालु हुआ युद्ध में अचानक बाहुबली को विचार आया के अपने से बडे भाई के साथ कैसे युद्ध कर सकता हूं? इसलिए भाई पे उठाया हुआ हाथ पिछे न लेते हुए उन्होंने केशलुंचन करके दीक्षा ग्रहण करली। दीक्षा लेने के बाद वे जंगल में अकेले विचरने लगे और कठोर तपस्या करने लगे.. क्योंकि अगर वे भगवान के पासे जाते तो उन्हें अपने ९८ छोटे भाईओं को वंदना करनी पडती... भगवानने अपने ज्ञान द्वारा जाना की कठोर तपस्या करने के पष्चात बाहुबली को अहंम की वजह से केवलज्ञान उत्पन्न नहीं हो रहा हैं, उन्होंने अपनी संयमी पुत्री ब्राह्मी और सुंदरी को बाहुबली को बोध देने के लिए भेजा। अपनी बहनो से बोध मिलते ही बाहुबली ने अपना अभिमान छोडा और जैसे ही अपने भाईयों को वंदना करने के भाव से पैर उठाया, तभी उन्हें केवलज्ञान हो गया। यह है वंदना का प्रभाव।

Example of Persistence

Thomas Edison failed 10,000 times when he was trying to make a light bulb... Somebody asked him, "Aren't you ashamed that you failed 10,000 times?" Thomas Edison replied, "No, I have not failed 10,000 times. Instead, I have discovered 10,000 ways which will not work to make a bulb."

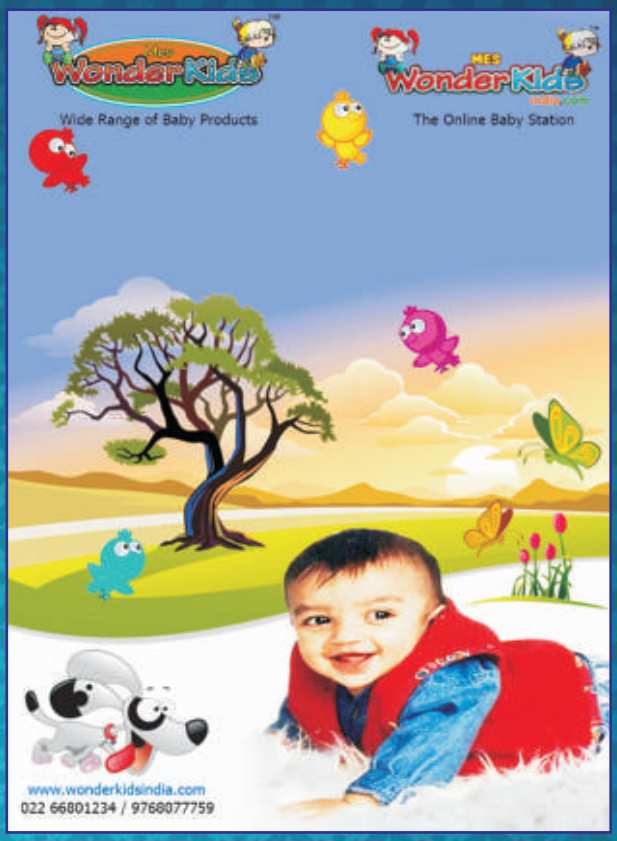

Even One term of Look N Learn shows Great impact!

A 5 year old kid, Yash, living in New Jersy visited India (Mumbai) last year and joined Look N Learn centre in his holidays. After joining, he has learnt many values of Jainism & is also applying them in his life. He has learnt Guru Vandan Sootra, greets Jai Jinendra when he wakes up in the morning and also when he goes to bed.

Yash very well understands the concept of Ahimsa and follows them. He has stopped eating Kandmool and guides his Parents also not to eat. He checks in malls while buying food products whether they are Vegetarian or not. He prefers Jain food. He has stopped having Soft drinks or Soda, Cup cakes, Cookies, Candies, etc. He prefers home made cakes, chocolates, fresh juices. He regularly goes to Paathshala and learns Samayik and other Sootras.

Punya ➤ Dharma ➤ Moksh

NAV PUNYA NAV PADNU PRATIK

अन्नपुण्य करवाथी अरिहंत पदनी प्राप्ति थाय छे।

पाणी तरस छीपावे छे,
सिध्ध अवस्था ते बाहाने आभ्यंतर
इच्छानो अंत करावे छे।

वस्त्र ए आचारनुं प्रतिक छे,
सदाचार ते आत्मनुं वस्त्र छे।
आचार्य पदनी उपासना थाय छे।

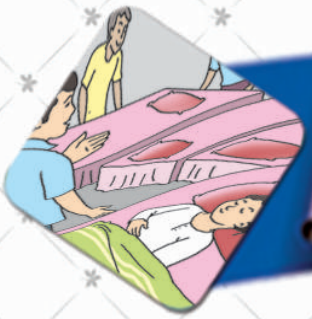

पोताना सिवाय अन्यने
स्थान आपवाथी वीनय
गुणनी प्राप्ति थाय छे।

शयन एटले रहेवा, सूवा माटे व्यवस्था करवी। शयन पुण्य ए साधु पदनुं प्रतिक छे।

सर्व जीव प्रत्ये मैत्री भाव राखवा थी सम्यक् दर्शन पदनी प्राप्ति थाय छे।

वाणी ज्ञान नुं प्रतिक छे। श्रुतज्ञाननी प्राप्ति द्वारा थाय छे। वचन पुण्य ए सम्यक् ज्ञाननुं प्रतिक छे।

काया द्वारा सुपात्रनी सेवा, भक्ति अने चारित्र धर्मनुं पालन थाय छे। ते सम्यक् चारित्र पदनुं प्रतिक छे।

नमस्कार विनयनुं स्वरुप छे। विनय अभ्यंतर तप छे, नमस्कार पुण्य सम्यक् तप पदनुं प्रतिक छे।

Punya Balance

Kids

Casper

Hey kids! Do you all know? Is binding Punya the monopoly of human beings only? Who can bind Punya?

Yes of course, only humans can bind Punya

Why? Why is it so? Can you explain?

Yes! Because only we have knowledge and proper understanding. Only we are smart!

No... No... Punya is not only our monopoly. With right vision all living beings from all gatis can do punya and bind good deeds.

Oh really! Can you explain how an animal can bind Punya, when it can't even talk or do any dharmik activity?

Yes dear! Have you forgotten? Don't you remember the snake Chandakaushik?

Oh yes, I remember now!

How he changed his perception from being a cruel snake to an ideal Shravak. How he punished himself after getting right knowledge from Parmatma Mahavir. How he stopped eating food & even moving his body to give Abhay Daan. This all was binding of punya! And as a result of which he attained Moksha in his next birth.

Similarly we have examples of Meghkumar & Nandmaniyar and many more from Tiryanch (Animal Kingdom) who have bounded Punya by doing good deeds & got their next birth from Tiryanch to Dev and Manushya.

But how do the Jeev from Narak Gati bind Punya? In Narak Gati, one only has to experience the fruit of his bad deeds right?

Yes, its right that in Narak gati one can only get the fruit of its own bad deeds, but at the same time if one has that understanding & accepts all the pains given from Narakis or Paramdhami Dev with peace one can bind Punya even in Narak.

Oh, is that so!!! I never knew about this!

Yes, we should understand that in Narak we only bear the fruits of our own bad deeds. No one else is responsible for that.

Then why do the Dev from Devlok need to bind Punya? They already are bearing so much happiness. How do they bind Punya if they can't do Samayik, Pratikraman, Chauvihar, etc.

Yes, that's right. The Devs of Devlok can't Dharma like we can do. We are very lucky. But they celebrate the 5 Kalyanaks of all Tirthankars, they do selfless Seva of Bhagwan and their devotees and thus bind good Karmas. Even they need Punya because after the Devlok gati, they may also get birth in Narak and Tiryanch Gati.

Oh yes! Now I understand that Punya can be done by all Gatis. Doing Punya leads to accumulation of good karmas and these good karmas help us to do Dharma which ultimately results in Moksha!!!

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol. : 6, Issue : 08, Date : 25.11.2015, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/TECH/WPP-273/NE/2015.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Open Bus Ride for Quit crackers

Look N Learn's 14 centers, 140 Didis, 1400 kids celebrated Diwali in a unique way thus creating awareness for an Eco-Friendly Diwali on the streets of Mumbai...

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth